RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-07
July-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i07.001

जम्मू व कश्मीर में शांति की चुनौतियाँ व स्थानीय जीवन पर प्रभाव
(विशेष संदर्भ जम्मू संभाग)

[1]रोहित शर्मा; [2]डॉ० मनोज कुमार राय

पीएचडी शोधार्थी, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
एसोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

शांति के संदर्भ में या स्मृद्ध सांस्कृतिक विरासत के तौर पर देखें तो भारत विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं का एक विशाल देश है जिसमें प्राचीन काल से ही विभिन्न संस्कृतियाँ फलती–फूलती आई हैं। भारत के प्राचीन इतिहास में जम्मू व कश्मीर के प्राचीन इतिहास का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। "कश्मीर भारतीय उपमहाद्वीप का वह इकलौता क्षेत्र है जिसका इतिहास लिखित रूप में अबाध, श्रेणीबद्ध और उपलब्ध है। कल्हण द्वारा लिखी गयी *राजतरंगिणी* कश्मीर के राजवंशों और राजाओं का प्रामाणिक इतिहास है"। जम्मू व कश्मीर के प्राचीन इतिहास में यह पूरा क्षेत्र शांत एवं स्मृद्ध रहा। जम्मू व कश्मीर राज्य वर्तमान समय का केंद्र शासित प्रदेश जिसमें दो मुख्य संभाग हैं जो कि जम्मू संभाग व कश्मीर संभाग हैं। इन दोनों संभागों की ऐतिहासिकता एक ही मानी जाती है क्योंकि जम्मू संभाग का निर्माण जाम्बूलोचन से देखा जाता है "इसे प्राचीन काल के रघुवंशी राजा जाम्बूलोचन नें बसाया था उसी के नाम पर इसका नाम जम्बू और बाद में जम्मू पड़ा"। जम्मू के बुजुर्ग डोगरा लोगों की मान्यता है कि प्राचीन काल में जम्बू नगरी की स्थापना बाहु से पहले नगरी परोल के एरवा स्थान से मानते हैं लेकिन किसी ग्रंथ में इसको प्रमाणित तौर पर कहीं नहीं पाया गया है।

जम्मू संभाग शांति को शांति के दृष्टिकोण से देखें तो वर्तमान समय में यह समूचा संभाग जिसकी सीमाओं में पाकिस्तान के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमा व नियंत्रण रेखा है और दूसरी तरफ हिमाचल प्रदेश व पंजाब राज्य की सीमाएं भी लगती हैं। इस पूरे संभाग का अपना एक राजनैतिक व भोगौलीक दृष्टिकोण से भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है जिसमें जम्मू संभाग की पाकिस्तान से लगने वाली अंतरराष्ट्रीय सीमा का क्षेत्र में मैदानी क्षेत्र हैं तो नियंत्रण रेखा का अधिकतम क्षेत्र दुर्गम व पहाड़ी है। इस पूरे क्षेत्र (अन्तर्राष्ट्रिय सीमा क्षेत्र व नियंत्रण रेखा सीमा क्षेत्र) में पाकिस्तान की तरफ से संभाग की शांति समय–समय पर प्रभावित होती रहती हैं जिसका पूरे जम्मू संभाग के स्थानीय जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है।

जम्मू व कश्मीर में शांति की चुनौतियों पर अध्ययन को देखें तो शांति के लिए चुनौतियाँ भारत विभाजन के तुरंत बाद से ही विश्व पटल पर प्रस्तुत हो गयी थी। भारत के विभाजन के बाद भारत एवं पाकिस्तान अलग–अलग राष्ट्र बनकर सामने आए। आजादी के कुछ ही महीने बाद दोनों राष्ट्रों के मध्य 1947–48 में कश्मीर को लेकर पहला युद्ध हुआ। जम्मू व कश्मीर में शांति की चुनौतियों और विशेष रूप से जम्मू संभाग में शांति की चुनौतियों और स्थानीय जीवन पर प्रभाव को समझना हो तो भारत व पाकिस्तान के मध्य हुए युद्धों और उसके बाद की स्थिति को समझना अति आवश्यक बिन्दु है। 1947–48 में भारत व पाकिस्तान के मध्य युद्ध होना और उसके बाद "अंततः 31 दिसम्बर, 1948 को जब युद्धविराम की घोषणा हुई तो जम्मू और कश्मीर राज्य व्यावहारिक रूप से दो हिस्सों में बंट चुका था– भारतीय प्राधिकार वाली कश्मीर घाटी, लेह और जम्मू तथा पाकिस्तानी प्राधिकार में आजाद कश्मीर तथा गिलगिट और बाल्टिस्तान" लेकिन युद्धविराम की घोषण तो हुई परंतु शांति स्थापित न हो सकी और शांति के लिए चुनौतियाँ बनी रही और स्थानीय जीवन भी प्रभावित होता रहा और 1949 के बाद राज्य की स्थिति कुछ हद तक सामान्य रही पर बहुदा शांतिमय नहीं रही। 1965 के दशक में दोनों राष्ट्र (भारत व पाकिस्तान) युद्ध के रूप में आमने–सामने आ गये। यह युद्ध ऐसे समय में पाकिस्तान द्वारा भारत पर थोप दिया गया जिस समय भारत काफी संकट की घड़ी से जूझ रहा था। उस समय भारत की आर्थिक स्थिति भी काफी खराब थी जिसका कारण 1962 में भारत–चीन युद्ध जिसमें भारत की हार और फिर आर्थिक तंगी के साथ–साथ शांति की चुनौतियाँ भी थी लेकिन इस स्थिति में भी तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री का मत दोनों राष्ट्रों के मध्य शांति बनाए रखने का था और "3 मई 1965 के दिन राज्य सभा में बोलते हुए उन्होने कहा, "भारतीय उपमहाद्वीप में अगर लड़ाई हुई तो भारत और पाकिस्तान– दोनों ही देशों के लोगों के जीवन–स्तर को सुधारने के लिए की जा रही कोशिशों पर पानी फिर जाएगा" यहाँ भारत दोनों देशों की शांति व स्थानीय जीवन और युद्ध से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों के विषय में सोच रहा था लेकिन युद्ध तब भी हुआ जिसकी शुरुआत कच्छ के रन से विवाद के रूप में शुरू होकर जम्मू के छम्ब से घोषित युद्ध के

RRIJM 2015, All Rights Reserved

रूप में शुरू हुआ जिसका सीधा प्रभाव जम्मू संभाग की शांति को प्रभावित करना तो था ही इसके साथ–साथ संभाग के चिनाव पूल पर कब्जा कर उस पूरे क्षेत्र पर अधिकार स्थापित करना था। इस युद्ध की समाप्ति दोनों देशों के मध्य ताशकंद समझौते में युद्धविराम की संधि के साथ हुई। इस युद्ध में जम्मू संभाग को पूरी तरह से निशाना बनाया गया जिससे स्थानीय जीवन व शांति प्रभावित हुई थी।

संभाग की शांति पर अगला प्रभाव व प्रहार 1971 के युद्ध के समय भी हुआ जिसमें बांग्लादेश के अस्तित्व को लेकर युद्ध हुआ जिसका प्रभाव जम्मू व कश्मीर में भी कुछ हद्द तक था। इस युद्ध की समाप्ति के बाद 2 जुलाई 1972 को शिमला समझौता हुआ और शांति के प्रयास किए गए लेकिन पाकिस्तान में सैन्य तख्ता पलट हो जाने से स्थिति कुछ बहुत सामान्य नहीं रही और शिमला समझौता एक तरह से असफल हो गया और दोनों राष्ट्रों के मध्य अस्सी का दशक आते–आते सियाचिन की तरफ कुछ तनाव की स्थिति बनी जिसका कारण पाकिस्तान के द्वारा पर्वतारोहियों के द्वारा भारतीय क्षेत्र की तरफ भेजना व उस क्षेत्र का नक्शा पाकिस्तान के द्वारा तैयार करना था। 1999 के कारगिल युद्ध को उसी विवाद की जड़ के रूप में देखा जा सकता है जिसका परिणाम वर्ष 1999 में स्पष्ट दिखा जिसमें कारगिल क्षेत्र पर कब्जा कर लद्दाख और सियाचिन को भारत के संपर्क से हटाकर पूरे क्षेत्र पर कब्जा करने की रणनीति के रूप में हम कहीं–न–कहीं देख सकते हैं। कारगिल के युद्ध से पूरे देश की शांति पर प्रभाव पड़ा और जम्मू संभाग की शांति व जनजीवन भी प्रभावित हुआ।

वर्तमान समय में जम्मू संभाग की शांति और स्थानीय जीवन पर प्रभाव को देखें तो भारत एवं पाकिस्तान के मध्य नये तरह के तनाव की स्थिति 2010 से लेकर निरंतर सीजफायर उल्लंघन (धीमी गति का युद्ध) के रूप में सामने आयी है। इसके अलावा अन्य और भी कई चुनौतियाँ जम्मू व कश्मीर में शांति के मार्ग पर विद्यमान हैं जैसे कि आतंकवाद की समस्या व आतंकी घटनाएँ हैं। जिसमें "30 अक्तूबर 2001 में जम्मू व कश्मीर विधानसभा पर आतंकी हमला" व 14 मई 2002 का जम्मू के सैन्य पारिवारिक आवास पर आतंकी हमला मुख्य है जिसमें 47 लोग गंभीर रूप से घायल हुए और इस आतंकी कारवाई में 34 लोगों नें प्राण गवाये थे, जिनमें से ज्यादातर सैन्यकर्मियों की पत्नियाँ एवं छोट्टे बच्चे थे और साथ ही कुछ स्थानीय लोग भी मारे गये व घायल हुए थे। इसके अलावा कई अन्य आतंकवादी हमले हुए जिनमें जम्मू के रघुनाथ मंदिर पर आतंकी हमला, चिन्नोर का आतंकी हमला, सांबा का आतंकी हमला व अन्य कई आतंकवादी हमले संभाग में समय–समय पर हुए जिससे स्थानीय शांति व जनजीवन प्रभावित हुआ। वर्ष 2016 के जुलाई माह में आतंकी बुरहान बानी के मुठभेड़ में मारे जाने के बाद राज्य में अशांति का माहोल रहा जिसका प्रभाव जम्मू संभाग पर भी पड़ा। जिससे व्यापार व पर्यटन को तो असर हुआ ही स्थानीय जीवन भी प्रभावित रहा। जम्मू व कश्मीर में आतंकी घटनाएँ आम तौर पर आए दिनों होती ही रहती हैं जिससे भी देश व राज्य की शांति प्रभावित होती है। जम्मू व कश्मीर के उड़ी सैक्टर का आतंकवादी हमला व पुलवामा का आतंकवादी हमला बड़ी घटनाओं के रूप में जिससे पूरे देश में आक्रोश, अशांति व भय की स्थिति कहीं–न–कहीं व्याप्त हो रही थी और निश्चित तौर पर जम्मू संभाग व राष्ट्र की शांति पर इसका प्रभाव रहा। उड़ी के आतंकवादी हमले के बाद की एक महत्वपूर्ण घटना भारत की तरफ से सर्जिकल स्ट्राइक की घटना के रूप में है जिसके विषय में "भारत के डीजीएमओ लेफ्टिनेंट जनरल रनबीर सिंह नें गुरुवार दोपहर 12 बजे एक प्रेस कांफ्रेंस में 'भारतीय सेना के लाइन ऑफ कंट्रोल पर सर्जिकल स्ट्राइक कर आतंकवादी ठिकाने नष्ट करने का दावा किया" जो कि पाक–अधिकृत जम्मू व कश्मीर में आतंकवादी लांच पैड्स नष्ट कर पठानकोट हमले व उड़ी सेक्टर के आतंकवादी हमले के बदले के रूप में भी देखा जा सकता है जिससे सेना व सरकार के प्रति स्थानीय शांति को बनाये रखने के लिए कार्य के रूप में भी देखा जा सकता है। लेकिन इस स्ट्राइक के बाद दोनों राष्ट्रों के मध्य तनाव की स्थिति बन गयी और जिसका परिणाम सीमा क्षेत्र पर सीजफायर उल्लंघन के रूप में देखा गया। एक अन्य घटना जिसमें जनवरी 2018 को कठुआ के हीरानगर तहसील के गाँव रसाना में आठ वर्षीय बच्ची आसिफा बानों की निर्मम हत्या एवं बलात्कार से क्षेत्र में तनाव व अशांति का माहौल बन गया और पूरे देश में आक्रोश की स्थिति उत्पन्न हो गयी। इसी संदर्भ में जम्मू बंद रहा और एक विशाल जन आंदोलन हुआ जिसमें स्थानीय लोगों द्वारा रोहिंग्या विस्थापितों की जम्मू से वापसी व आसिफा की हत्या व बलात्कार केस की जांच सीबीआई से करवाने की मांग सरकार से की जिससे उस पूरे आंदोलन में जम्मू संभाग की शांति व जनजीवन प्रभावित हुए। जम्मू संभाग में अशांति के बीच एक अन्य घटना हुई जिसमें "जम्मू के सूजवां में सैन्य शिविर पर शनिवार (10 फरवरी,2018) तड़के सुबह आतंकवादियों नें हमला बोल दिया जिसमें दो सैनिक शहीद हो गए। शिविर में घुसे आतंकवादियों नें फॅमिली क्वार्टर्स में दाखिल होकर सो रहे लोगों पर गोलीबारी शुरू कर दी"। जम्मू शहर के सुंजवान के आर्मी केम्प पर आतंकी हमला होना जिसमें 10 लोगों के गंभीर रूप से घायल होने के साथ ही सेना के 5 जवान शहीद होने जिनमें 4 जवान जम्मू संभाग के ही स्थानीय नागरिक थे इसके साथ ही 1 अन्य स्थानीय नागरिक भी इस हमले में मारा गया। सेना की जवाबी कारवाई में 4 आतंकियों को ढेर कर दिया गया जिनकी पुष्टि सेना ने पाकिस्तानी नागरिकों के रूप में की थी। इस हमले की जिम्मेदारी पाकिस्तान के आतंकी संगठन लश्कर–ए–तयबा ने ली थी जिसे पाकिस्तान के द्वारा जम्मू संभाग की शांति भंग करने व स्थानीय जनता में भय की

RRIJM 2015, All Rights Reserved

स्थिति बनाने के रूप में हम देख सकते हैं। वर्ष 2010 से बनी सीजफायर उल्लंघन की समस्या भी एक विकराल समस्या के रूप में है जिसमें वर्ष 2014 में 555 से अधिक बार सीमा क्षेत्र में गोली चली और वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के समय में भी पाकिस्तानी फायरिंग सीमा क्षेत्र के लोगों के लिए एक गंभीर समस्या के रूप में है। इसके पीछे के वर्षों को देखें तो वर्ष 2018 के मई माह तक पाकिस्तान के द्वारा जम्मू संभाग में 747 बार सीजफायर का उल्लंघन कर सीमा क्षेत्र पर गोली चलाई गयी जिसमें दर्जनों लोगों के जान और माल की हानि के साथ कुल 76 हजार लोगों ने अपने गाँव खाली कर दिये जिससे 100 से अधिक गाँव सुनसान पड़ गए जिससे जम्मू संभाग के स्थानीय जीवन व शांति पर गहरा प्रभाव देखने को मिला।

निष्कर्षः

इन सभी पहलुओं को देखा जाए तो यह सब जम्मू व कश्मीर राज्य के जम्मू संभाग की शांति को बहुत प्रभावित किये हैं। जिससे जम्मू व कश्मीर में शांति के लिए चुनौतियों के साथ–साथ स्थानीय जीवन पूरी तरह से प्रभावित हो रहा है और जम्मू संभाग के पुंछ, राजौरी, किश्तवाड़, जम्मू, सांबा व कठुआ जिलों में मुख्य रूप से शांति की चुनौतियों में काफी वृद्धि हुई है व स्थानीय जीवन भी समय–समय पर प्रभावित होता रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

[1]. पाण्डेय, अशोक कुमार. (2018). 'कश्मीरनामा, इतिहास और समकाल'. राजपाल एण्ड स्न्ज. दिल्ली. पृ 15. पृ 316.

[2]. उर्मिलेश. (2016). 'कश्मीर, विरासत और सियासत'. अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड. दिल्ली. पृ 13.

[3]. श्रीवास्तव, सी. पी. नेने, शंकर. (2005). 'राजनीति में सत्यनिष्ठ जीवन, लाल बहादुर शास्त्री'. नरेंद्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि० दिल्ली. पृ 123.

[4]. https://www.bbc.com/hindi/india-37507085

[5]. https://www.jansatta.com/rajya/jammu-kashmir/srinagar/former-jammu-and-kashmir-chief-minister-farooq-abdullah-said-india-pakistan-can-resolve-problem-by-dialogue/569267/

RRIJM 2015, All Rights Reserved